International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अजमेर संभाग मे भौगोलिक निर्धनता का विश्लेषण

शोध निर्देशिका
डॉ. सुनीता पचौरी
सह आचार्य
भूगोल विभाग
सी.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज.)

शोधार्थी
अभिषेक चौहान
भूगोल विभाग
सी.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज.)

सांराश : अजमेर संभाग राजस्थान के मध्य पूर्वी भाग में स्थित है। यह $26^0 25'$ उतरी अंक्षाश से $27^0 50'$ उतरी अंक्षाश और $73^0 10'$ पूर्वी देशान्तर से $76^0 16'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। भौगालिक प्रदेश ऐसे क्षेत्र होते है जिसके सम्पूर्ण भौगालिक स्वरूप मे समरूपता तथा विशिष्टता मिलती है। निर्धनता से तात्पर्य है जीवन, स्वास्थय तथा कार्यकुशलता के लिऐ न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं की प्राप्ति की अयोग्यता से है। भूगोल गरीबी और विकास किसी भी क्षेत्र के विकास का असमान प्रारूप होता है क्योकि किसी भी क्षेत्र मे गरीबी की व्यापकता भौगालिक स्थान की पहचान, भूमि, आजीविका और समाज पर उसके समग्र प्रभाव की परस्पर आत्मनिर्भरता होती है।

शब्दावली : गरीबी, जलवायु, भौगोलिक, संभाग

अजमेर संभाग मे भौगोलिक निर्धनता का विश्लेषण

अजमेर संभाग राजस्थान के मध्य पूर्वी भाग में स्थित है। यह $26^0 25'$ उतरी अंक्षाश से $27^0 50'$ उतरी अंक्षाश और $73^0 10'$ पूर्वी देशान्तर से $76^0 16'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। अजमेर संभाग में चार जिले शामिल हैंः अजमेर, भीलवाड़ा, नागौर और टोंक। यह अजमेर संभाग का कुल क्षेत्रफल 43,848 कि.मी.^{2} है, जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल (3,42,239 कि.मी.^{2}) का 12.81 प्रतिशत है। भौगालिक प्रदेश ऐसे क्षेत्र होते है जिसके सम्पूर्ण भौगालिक स्वरूप मे समरूपता तथा विशिष्टता मिलती है। अर्थात् प्राकृतिक स्वरूप, जलवायु, प्राकृतिक संसाधन उपयोग प्रारूप, आर्थिक कार्य, सामाजिक सॉंस्कृतिक स्वरूप मे परस्पर प्रभाव के कारण जहॉं तक एक समान दशाएँ मिलती है। गरीबी अर्थात् निर्धनता से तात्पर्य है जीवन, स्वास्थय तथा कार्यकुशलता के लिऐ न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं की प्राप्ति की अयोग्यता। इन न्यूनतम आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी न्यूनतम मानवीय आवश्यकताएँ शामिल होती हैं। इन न्यूनतम मानवीय आवश्यकताओं के पूरा ना होने से मनुष्य को कष्ट उत्पन्न होता है, स्वास्थ्य तथा कार्यकुशलता की हानि होती है। इसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्वि करना तथा भविष्य में निर्धनता से छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। गरीबी एक बहुआयामी समस्या है और इसका विश्लेषण बहुविषयक आधार अर्थात् भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक आदि के आधार पर किया जाना आवश्यक है।

उद्देश्य :

1) निर्धनता को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारको को जानना।
2) निर्धनता को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारको को जानना।

विधितंत्र :

यह शोधपत्र प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के ऑंकड़ों के संग्रहण पर आधारित है। प्राथमिक ऑंकड़ों के संग्रहण के लिए विभिन्न स्तरों (चरणों) में याद्दच्छिक प्रतिचयन का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक ऑंकड़े विभिन्न सरकारी व अर्द्व-सरकारी कार्यालयों, गैर सरकारी संस्थाओं, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकालयों आदि से एकत्रित करें है। एकत्रित ऑंकड़ों के परिशोधन के लिये मैनें निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

(1) माध्य विचलन (2) विचरण गुणांक

विश्लेषण :

उच्चावच

अजमेर संभाग आकार में अनियमित है। अरावली पर्वतमाला कई स्थानों पर संभाग को काटती है। संभाग की औसत ऊँचाई लगभग 300 मीटर है। संभाग के प्रमुख भाग में पहाड़ियाँ और रेगिस्तान शामिल हैं। अजमेर संभाग का उच्चावचीय स्वरूप विविधता से युक्त है यहाँ के उच्चावचीय प्रारूप ने जहाँ क्षेत्रीय विविधता प्रदान की है वही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राकृतिक विविधताओं को जन्म भी दिया है। अजमेर संभाग के चारों जिलो मे विविध उच्चावच है जो यहाँ के गरीबी के स्तर को प्रभावित करते है। संभाग के नागौर जिले मे विस्तृत मरूस्थल व बंजर भूमि, अजमेर मे फैली अरावली पर्वत श्रेणी जिले के विस्तार को बाधित करती है।

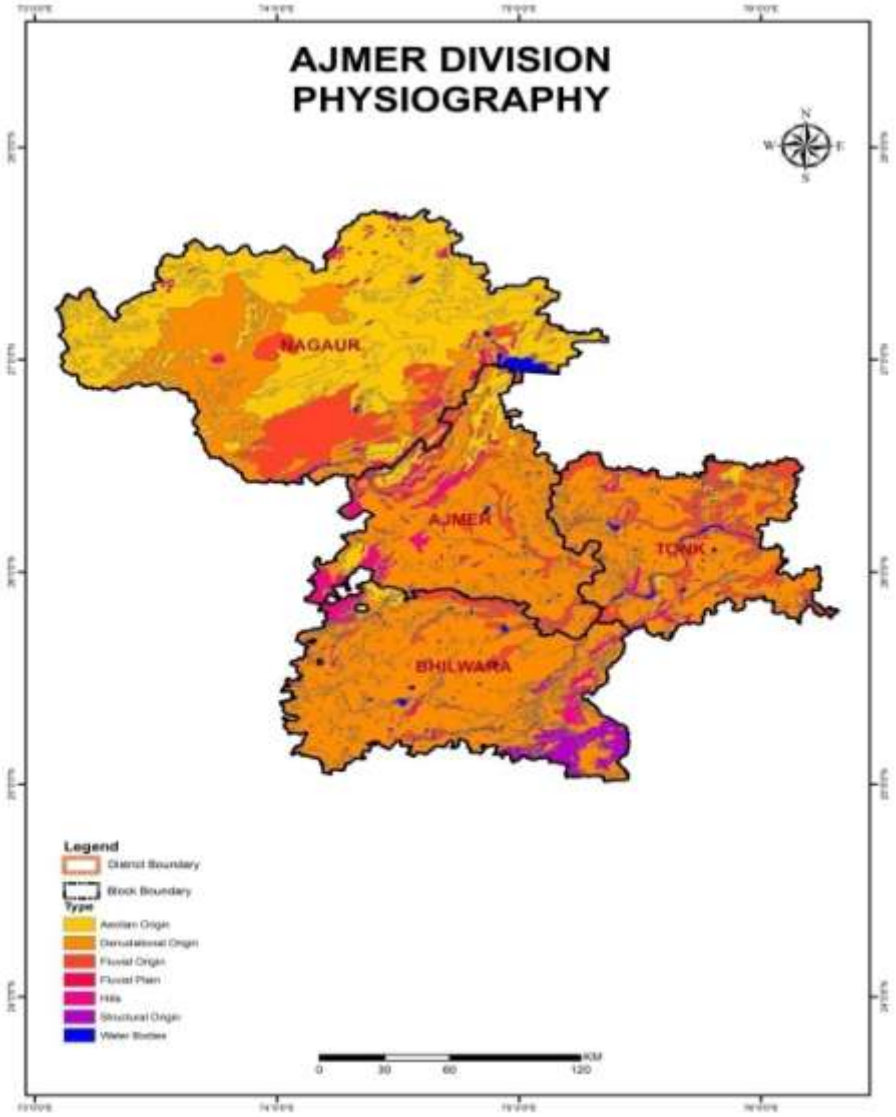

जलवायु दशाएँ

संभाग की जलवायु विषम है। गर्मियाँ गर्म व शुष्क है और सर्दियाँ बहुत ठण्डी है। सर्दियों का मौसम दिसम्बर से फरवरी तक होता है जबकि गर्मियों का मौसम मार्च से जून तक रहता है।। संभाग का औसत अधिकतम तापमान सामान्यताः 40 से 45 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहता है। संभाग का औसत न्यूनतम तापमान सामान्यताः 4 से 8 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहता है। संभाग के उत्तरी क्षेत्र में कुछ स्थान हैं जो सर्दियों में तुलनात्मक रूप से बहुत ठण्डे रहते हैं, न्यूनतम तापमान 0 से 2 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच आ जाता है। संभाग में वर्षा का मौसम तुलनात्मक रूप से कम है और केवल जुलाई से सितम्बर के मध्य तक रहता है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव भी संभाग की जलवायु पर दृष्टिगत होता है यहाँ वर्ष के लगभग 7–8 माह ग्रीष्म ऋतु का प्रभाव रहता हैं। जिसमे तापमान प्रायः उच्च बना रहता है, जो यहाँ के लोगो की कार्य करने की क्षमता को कम करता (कर देता)है। संभाग में वर्षा का मौसम तुलनात्मक रूप से कम है और केवल जुलाई से सितम्बर के मध्य तक रहता है तथा वर्षा की मात्रा न्यून है। जिससे यहाँ का फसल उत्पादन कम हो रहा है और वनस्पति आवरण संकुचित हो रहा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी 1.1 तालिका से तापमान में असमानता को दर्शाया गया है–

जिलें	वर्ष	तापमान (सेल्सियस में)			आर्द्रता प्रतिशत
		अधिकतम	न्यूनतम	माध्य	
अजमेर	2018	46.6	3.3	26.4	45
	2017	45.6	6.1	27.2	44
	2016	44.4	8.4	27.2	39
	2015	42.0	5.2	26.1	42
	2014	43.0	6.2	26.6	42
भीलवाड़ा	2018	45.8	2.3	25.9	61
	2017	47.5	4.0	26.7	55
	2016	45.5	4.6	26.1	56
	2015	43.5	0.5	25.4	58
	2014	44.6	3.4	25.9	56
नागौर	2018	47.8	4.2	27.1	46
	2017	46.4	5.4	27.9	45
	2016	44.8	7.8	28.3	41
	2015	42.9	3.4	27.1	46
	2014	44.0	6.6	27.5	44
टोंक	2018	46.6	3.3	26.4	45
	2017	45.6	6.1	27.2	44
	2016	44.4	8.4	27.2	39
	2015	42.0	5.2	26.1	42
	2014	43.3	6.2	26.6	52

सारणी 1.2 अजमेर संभाग मे सामान्य से विचलन के साथ जिलावार मासिक औसत वर्षा (वर्ष 2014–18)

जिलें	सामान्य वर्षा (मि.मी.)	2014		2015		2016		2017		2018	
		वास्तविक (मि.मी.)	विचलन (:)	वास्तविक (मि.मी.)	विचलन (:)	वास्तविक (मि.मी.)	विचलन (:)	वास्तविक (मि.मी.)	ध्वचलन (:)	वास्तविक (मि.मी.)	विचलन (:)
अजमेर	429.6	527.3	22.7:	412.50	–4.0:	534.80	24.5:	483.40	12.5:	426.66	–0.7:
भीलवाड़ा	580.9	614.9	5.9:	418.15	–28.:	817.31	40.7:	517.73	–10.9:	568.58	–2.1:
नागौर	348.5	411.0	17.9:	421.18	20.9:	436.54	25.3:	371.31	6.5:	344.31	–1.2:
टोंक	566.0	707.9	25.1:	491.88	–13.:	726.38	28.3:	416.38	–26.4:	523.75	–7.5:

`वनतबम.ीजजचेरू्ध्ूजमतण्तंरेंजींदण्हवअण्पदध्ब्वदजमदजध्कंउ्ध्ूजमतध्ूजमत.तमेवनतबमे
कमचंतजउमदजध्ंपदसिसध्ड्वदेववदत्मचवतजध्ड्वदेववदः20तमचवतजः202018ण्चकf

आरेख : 1.1

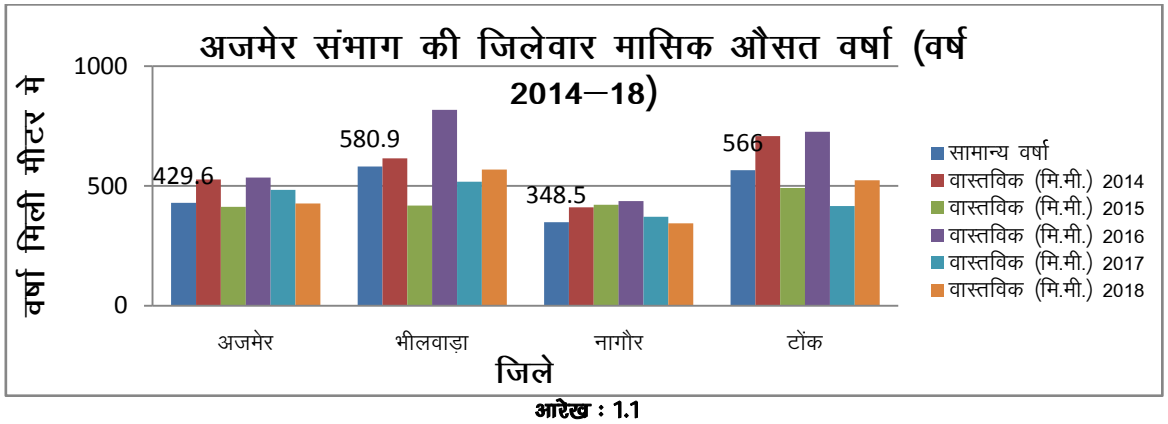

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपरोक्त 1.1, 1.2 सारणी व 1.1 आरेख मे अजमेर संभाग मे जिलेवार तापमान की असमानता औसत वर्षा का वितरण दर्शाया गया है। सर्वाधिक वर्षा भीलवाड़ा जिले मे व न्यूनतम वर्षा नागौर जिलें मे होती है।

सारणी 1.3 अजमेर जिले का 1995–2015 वर्ष का औसत तापमान, अधिकतम व न्यूनतम तापमान और औसत वर्षा

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
औसत तापमान	16०1^{0}ब	19०5^{0}ब	24०8^{0}ब	30०9^{0}ब	33०9^{0}ब	32०4^{0}ब	28०1^{0}ब	26०2^{0}ब	26०3^{0}ब	25०9^{0}ब	21०7^{0}ब	17०4^{0}ब
न्यूनतम तापमान	8०9^{0}ब	11०8^{0}ब	16०8^{0}ब	22०7^{0}ब	27^{0}ब	27०2^{0}ब	24०9^{0}ब	23०6^{0}ब	22०6^{0}ब	19०2^{0}ब	15०0^{0}ब	10०5^{0}ब
अधिकतम तापमान	23०5^{0}ब	27^{0}ब	32०6^{0}ब	38०1^{0}ब	40०5^{0}ब	37०8^{0}ब	31०8^{0}ब	29०6^{0}ब	31०3^{0}ब	32०5^{0}ब	28०7^{0}ब	24०7^{0}ब
वर्षा (मि,मी,)	5	5	3	4	6	60	247	221	78	9	5	2

सारणी 1.4 भीलवाड़ा जिले का 1995–2015 वर्ष का औसत तापमान, अधिकतम व न्यूनतम तापमान और औसत वर्षा

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
औसत तापमान	15०2^{0}ब	18०^{0}ब	24०3^{0}ब	29०9^{0}ब	33^{0}ब	32०3^{0}ब	28०5^{0}ब	26०5^{0}ब	27०2^{0}ब	20०1^{0}ब	21०4^{0}ब	16०7^{0}ब
न्यूनतम तापमान	8०5^{0}ब	11०5^{0}ब	16०7^{0}ब	22०2^{0}ब	26०5^{0}ब	27०2^{0}ब	25०2^{0}ब	23०8^{0}ब	23^{0}ब	19०8^{0}ब	15०1^{0}ब	10०3^{0}ब
अधिकतम तापमान	22०4^{0}ब	25०9^{0}ब	31०6^{0}ब	37०1^{0}ब	39०5^{0}ब	37०6^{0}ब	32०6	30०2^{0}ब	31०9^{0}ब	32०6^{0}ब	28०3^{0}ब	23०9^{0}ब
वर्षा (मि,मी,)	6	8	5	6	9	46	165	150	59	10	7	2

सारणी 1.5 नागौर जिले का 1995–2015 वर्ष का औसत तापमान, अधिकतम व न्यूनतम तापमान और औसत वर्षा

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
औसत तापमान	15^{0}ब	18०7^{0}ब	24०8^{0}ब	30०7^{0}ब	34०2^{0}ब	34^{0}ब	30०7^{0}ब	28०8^{0}ब	29०8^{0}ब	28^{0}ब	22०2^{0}ब	16०7^{0}ब
न्यूनतम तापमान	7०8^{0}ब	10०9^{0}ब	16०6^{0}ब	22०3^{0}ब	26०9^{0}ब	28०5^{0}ब	26०9^{0}ब	25०3^{0}ब	24०9^{0}ब	21^{0}ब	15०0^{0}ब	9०4^{0}ब
अधिकतम तापमान	22०0^{0}ब	25०8^{0}ब	32०0^{0}ब	37०8^{0}ब	40०5^{0}ब	39०1^{0}ब	34०9^{0}ब	32०9^{0}ब	34०9^{0}ब	34०7^{0}ब	29०2^{0}ब	24^{0}ब
वर्षा (मि,मी,)	4	8	3	5	10	34	102	92	36	9	3	1

सारणी 1.6 टोंक जिले का 1995–2015 वर्ष का औसत तापमान, अधिकतम व न्यूनतम तापमान और औसत वर्षा

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
औसत तापमान	15०3^{0}ब	19०1	24०9^{0}ब	31०0^{0}ब	34०8^{0}ब	34०0^{0}ब	29०7^{0}ब	27०8^{0}ब	28०3^{0}ब	26०7^{0}ब	21०8^{0}ब	16०8^{0}ब
न्यूनतम तापमान	8०3^{0}ब	11०5^{0}ब	16०7^{0}ब	22०5^{0}ब	27०6^{0}ब	28०8^{0}ब	26०5^{0}ब	25०0^{0}ब	24०1^{0}ब	19०9^{0}ब	14०9^{0}ब	9०8^{0}ब
अधिकतम तापमान	22०5^{0}ब	26०6^{0}ब	32०7^{0}ब	38०7^{0}ब	41०6^{0}ब	39०3^{0}ब	33०6^{0}ब	31०3^{0}ब	33०1^{0}ब	33०6^{0}ब	29०0^{0}ब	24०1^{0}ब
वर्षा (मि,मी,)	9	7	4	5	7	58	222	202	72	11	8	3

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपरोक्त सारणी 1.3,1.4,1.5 व 1.6 मे अजमेर संभाग के विभिन्न जिलो का औसत तापमान, औसत अधिकतम व न्यूनतम तापमान व औसत वर्षा को दर्शाया गया है। उपरोक्त सारणी मे औसत माध्य विधि के द्वारा विभिन्न जिलो का तापमान व वर्षा के पिछले बीस वर्षो का विश्लेषण किया गया है। जिससे यह ज्ञात हुआ कि संभाग के विभिन्न जिलो मे वर्ष के आठ माह तापमान उच्च बना रहता है। जो यहाँ के श्रमिको की कार्यक्षमता को प्रभावित करता है। कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है साथ ही सूखे की स्थिति भी उत्पन्न करता है। जो संभाग मे गरीबी का प्रमुख कारण है।

प्राकृतिक वनस्पति

अजमेर संभाग मे सर्वाधिक वन क्षेत्र अजमेर जिले मे तथा न्यूनतम वन क्षेत्र नागौर जिले मे है। अरावली क्षेत्रों मे वनो का तेजी से ह्रास हो रहा है जो चिंता का विषय है। वनो के विनाश ने मृदा अपरदन की समस्या को ओर भी गम्भीर कर दिया है, यद्यपि राज्य सरकार व प्रशासन वन विकास एवं संरक्षण हेतु पर्याप्त व्यय तथा नीति निर्धारण कर रहा है, किन्तु जन भागीदारी के आभाव मे वास्तविक वृक्षारोपण सफल नहीं हो पा रहा है। वनस्पति आवरण के कम होने से भू-मण्डलीय तपन मे वृद्धि व वर्षा की अनियमितता मे वृद्धि हुयी है। जिस कारण गरीब लोगो की अर्थव्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मृदा

अजमेर संभाग मे मृदा की उत्पादकता मे विविधता है। संभाग मे जलवायु एवं धरातलीय विविधता अत्यधिक होने तथा मरूस्थलीय विस्तार आदि के कारण मृदा सम्बन्धी समस्याओं का जन्म हुआ है। एक ओर प्राकृतिक कारणों से मृदा समस्या उत्पन हुई है यद्यपि कुछ क्षेत्रों मे मानवीय कारण भी इसमें प्रभावी रहे है, जैसेः अधिक सिंचाई, अकुशल भू-प्रबन्ध, अनियंत्रित पशुचारण आदि। मरूस्थलीय क्षेत्रों विशेषकर उत्तर-पश्चिमी भागो मे वायु द्वारा मृदा अपरदन होता है। नागौर मे मृदा मे लवणीयता की समस्या प्रमुख है। अरावली के ढ़ालो पर वर्षा का जल तीव्र गति से प्रवाहित होता है जिससे मृदा का कटाव होता है। ढलान वाले क्षेत्रों मे सामान्य से गम्भीर जल अपरदन देखने को मिलता है।

प्राकृतिक वनस्पति

अजमेर संभाग मे सर्वाधिक वन क्षेत्र अजमेर जिले मे तथा न्यूनतम वन क्षेत्र नागौर जिले मे है। कृषि भूमि विस्तार, आवासीय भूमि की बढ़ती आवश्यकता के कारण वनो का तेजी से ह्रास हो रहा है जो चिंता का विषय है। वनो के विनाश ने मृदा अपरदन की समस्या को ओर भी गम्भीर कर दिया है, यद्यपि राज्य सरकार व प्रशासन वन विकास एवं संरक्षण हेतु पर्याप्त व्यय तथा नीति निर्धारण कर रहा है, किन्तु जन भागीदारी के आभाव मे वास्तविक वृक्षारोपण सफल नहीं हो पा रहा है।

सारणी 1.7 अजमेर संभाग का जिलेवार वनावरण (वर्ग कि.मी. में)

जिलें	आरक्षित वन	रक्षित वन	अवर्गीकृत वन	कुल वन भूमि
अजमेर	194.99	441.69	1.76	618.44
भीलवाड़ा	438.40	289.62	67.42	795.43
नागौर	0.80	206.28	35.32	242.40
टोंक	101.42	233.17	1.38	335.97

स्त्रोत – वन रिपोर्ट 2015

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

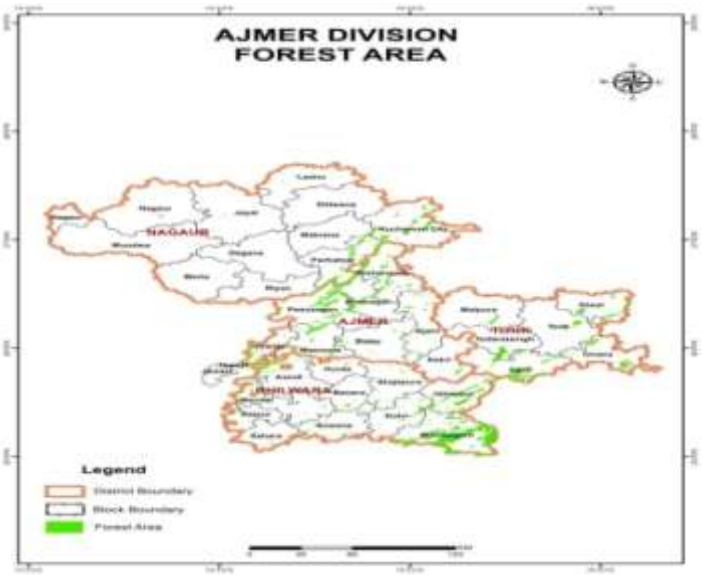

आर्थिक स्वरूप –: अजमेर संभाग मे उच्चावचीय बाधाएँ होने के बावजूद भी यह क्षेत्र आर्थिक विकास की ओर बढ़ रहा है।

कृषि

अजमेर संभाग में पिछले कुछ वर्षो में फसल प्रारूप बहुत हद तक अपरिवर्तित रहा है। अजमेर संभाग मे खरीफ व रबी दो प्रमुख फसल मौसम है। खरीफ की फसलें जून-जुलाई मे बोई तथा सितम्बर-अक्टूबर मे काटी जाती है। खरीफ की यहाँ प्रमुख फसलें बाजरा, ज्वार, दलहन, मक्का और मूंगफली हैं। रबी की फसल अक्टूबर-नवम्बर मे बोई तथा मार्च-अप्रैल मे काटी जाती है। रबी की यहाँ प्रमुख फसलें गेहूँ, जौ, दालें और तिलहन हैं। चूँकि अजमेर संभाग मे बढ़ती जनसँख्या के अनुरूप अनाज का उत्पादन नहीं हो पता है, अतः अनाज उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। कपास, तम्बाकू, मसाले, फल और सब्जियों जैसी फसलों का उत्पादन उन क्षेत्रो मे अधिक होता है जहाँ सिंचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध है। संभाग में सब्जी और फलों का भी उत्पादन किया जा रहा है। अरावली पर्वत श्रृंखला की स्थिति दक्षिण-पश्चिम मानसून के सामानान्तर है इस पर्वत श्रृंखला का विस्तार दक्षिण-पश्चिम से उतर-पूर्व की ओर है जो संभाग मे कम वर्षा के लिए उतरदायी है। कम पूँजी निवेश क्षमता, कृषिगत ऋण की अपर्याप्ता आदि के कारण संभाग के गरीब कृषक मूलक कृषि (`नइेपेजंदबम तिउपदह) के समकक्ष है।

उद्योग

अजमेर संभाग उद्योगों की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। नवीन तकनीकी के आभाव मे उद्योगो का विकास कम हुआ है। यद्यपि संभाग मे पर्याप्त खनिज भण्डार है। जिनमे अनेको श्रमिक कार्यरत है किन्तु इनके सुरक्षा हेतु पर्याप्त उपकरण व सुविधाओ का आभाव मे यह अनेक प्रकर की श्वास सम्बन्धी बिमारीयों से ग्रस्ति रहते है। जिस कारण इनकी औसत आयु कम हो जाती है।

सांराश

अध्ययन क्षेत्र मे गरीबी की व्यापकता का इतिहास भौगोलिक कारको के साथ उत्पादन के तरीको का आभाव, उत्पादन के तरीको के परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रभाव है। आज भी अधिकांश क्षेत्रो मे परम्परावादी तरीको से कृषि व संसाधनो का दोहन किया जाता है। अजमेर संभाग मे मौजूदा संसाधन क्षमता का दोहन नही हो पाया है, जबकि स्वतंत्रता के बाद इस क्षेत्र की खनिजों व अन्य संसाधनों की उपलब्धता के साथ औद्योगीकरण के लिए उपयुक्त माना गया है। स्थानीय लोग के सामाजिक व परम्परावादी तरीको का अभाव अधिक है जिसके कारण क्षेत्र की अकुशल आबादी का पर्याप्त अनुपात अभाव का शिकार हो जाता है। जिससे बेरोजगारी व निर्धनता क्षेत्र मे पायी जाती है। विभ्रिा अवधियों मे गरीबी का क्रम, भागीदारी का स्तर, संसाधन उपयोग और विकास रणनीतियों के साथ जुड़ाव आवश्यक होता है। स्थानीय अर्थव्यवस्था मे विविधिकरण जनजातीय बाहुल अजमेर व भीलवाड़ा जिलो मे प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है क्योंकि आदिवासी अपने प्राकृतिक जीवन से वंचित हो गये है और अपने पारम्परिक कौशल के आगे नवीन तकनीक से पिछड गये है। जिसके कारण आर्थिक गतिशीलता के क्षेत्र मे अभाव पैदा कर दिया है। यहाँ पर ऐतिहासिक, सामाजिक, साँस्कृतिक और आर्थिक आयामों के सन्दर्भ मे यह ध्यान रखा गया है कि उत्पादन के नये तरीके उनका प्रभाव संसाधनो का नियंत्रण व स्थानान्तरण मे स्थानीय लोगो की भागीदारी का महत्व है। जिस पर नये सिरे से सोचना होगा। एक जटिल और बहुआयामी समस्या के रूप मे गरीबी का क्षेत्र के भैगोलिक कारको के साथ धनिष्ट सम्बन्ध होता है। साथ ही वैश्विक, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर औद्योगिक व

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर्यावरण विकास की रणनीतियाँ भी स्थानीय लोगों को बहुत अधिक प्रभावित करती है। शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि भूगोल गरीबी और विकास किसी भी क्षेत्र के विकास का असमान प्रारूप होता है क्योकि किसी भी क्षेत्र मे गरीबी की व्यापकता भौगालिक स्थान की पहचान, भूमि, आजीविका और समाज पर उसके सम्मग्र प्रभाव की परस्पर आत्मनिर्भरता होती है तथा मानव विकास इसी पर निर्भर होता है।

सन्दर्भ सूची :

- **सक्सेना एच.एम. 2016 : राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी**
- District Census Handbook, 2011 Ajmer, rajasthan Series-09 part XII-A
- District Census Handbook, 2011 bhilwara, rajasthan Series-09 part XII-A
- District Census Handbook, 2011 nagaur, rajasthan Series-09 part XII-A
- District Census Handbook, 2011 Tonk, rajasthan Series-09 part XII-A
- okf"kZd ou fjiksZV 2015&16
- https://www.prsindia.org
- https://www.niti.gov.in